

अरावली ग्रीन वॉल परियोजना

चर्चा में क्यों?

[संयुक्त राष्ट्र मनुसथलीकरण रोकथाम सम्मेलन \(UNCCD\) COP16](#) के एक भाग के रूप में आयोजित [संयुक्त राष्ट्र](#) जलवायु कार्यक्रम में, भारत ने अपनी महत्वाकांक्षी '[अरावली ग्रीन वॉल परियोजना](#)' पर प्रकाश डाला, तथा वैश्विक स्तर पर क्षरित वन भूमि को बहाल करने के लिये नवीन दृष्टिकोण अपनाने के महत्त्व पर बल दिया।

प्रमुख बंदि

- अरावली ग्रीन वॉल परियोजना के बारे में प्रस्तुति:
 - [अफ्रीका की ग्रेट ग्रीन वॉल पहल](#) से प्रेरित होकर, अरावली ग्रीन वॉल परियोजना का उद्देश्य है-
 - वर्ष 2027 तक 1.1 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षतगिरस्त भूदृश्यों को पुनरस्थापति करना।
 - देशी प्रजातियों के साथ [वनरोपण](#), मृदा स्वास्थ्य सुधार और [भूजल पुनःपूरति](#) पर ध्यान केंद्रति करना।
 - शहरी उष्मीय द्वीपों को कम करने के लिये एक "इकोलॉजिकल वॉल" वकिसति करना तथा एनसीआर के लिये कार्बन सकि के रूप में कार्य करना।
- अरावली पर्वतमाला का महत्त्व:
 - अरावली पर्वतमाला एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करती है जो [थार रेगसिस्तान](#) को पूरव की ओर फैलने से रोकती है।
 - यह "अद्वितीय वनस्पतियों और जीवों के भंडार" के रूप में कार्य करता है, लेकिन [भूमि क्षरण और मनुसथलीकरण](#), [अतकिरण](#), [खनन और शहरीकरण](#) सहति गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है।
- पुनर्बहाली की आवश्यकता:
 - इन खतरों से नपिटने और गरिबट को रोकने के लिये तत्काल कार्यवाही की आवश्यकता है।
 - इस पुनरुद्धार प्रयास में [हरयाणा](#), [दलिली](#), [राजस्थान](#) और [गुजरात](#) का सहयोग शामिल है।
- कार्यान्वयन रणनीति:
 - राज्य सरकारें लाखों देशी वृक्ष और झाड़ियाँ लगाएँगी और [मृदा संरक्षण](#) को बढ़ावा देंगी।
 - हरयाणा में पहले चरण में गुड़गाँव, फरीदाबाद और भविानी सहति प्रमुख ज़िलों में **66 जल नकियाँ का पुनरुद्धार** कया जाएगा।
 - हरयाणा की योजना में 35,000 हेक्टेयर भूमि का पुनरुद्धार शामिल है, जसिमें से अकेले गुड़गाँव में 18,000 हेक्टेयर भूमि शामिल है।
- वैश्विक अपील और वजिन:
 - सरकारों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और नजी संस्थाओं को शामिल करते हुए वैश्विक साझेदारियों से तकनीकी और वतितीय संसाधनों के साथ इस पहल का समर्थन करने का आह्वान कया गया है।
 - इस परियोजना का उद्देश्य क्षीण हो चुके भूदृश्यों को पुनः स्थापति करने के वैश्विक प्रयासों के लिये एक "ब्लूपरटि" के रूप में कार्य करना है।
- नवीन दृष्टिकोण:
 - इस परियोजना में [प्रकृतिआधारति समाधान](#) शामिल कये गए हैं, जनिमें स्वदेशी प्रजातियों के साथ वनरोपण, मृदा स्वास्थ्य और नमी कायाकल्प, संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी पर ध्यान केंद्रति कया गया है।

अरावली पर्वत शृंखला

//



- अरावली, पृथ्वी पर सबसे पुराना वलति परवत है। भूवैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि यह तीन अरब वर्ष पुराना है।
- यह गुजरात से दल्लि (राजस्थान और हरयाणा से होकर) तक 800 कलिमीटर से अधिक तक फैला हुआ है।
- अरावली परवतमाला की सबसे ऊँची चोटी माउंट आबू पर स्थिति गुरु शखिर है।
- जलवायु पर प्रभाव:
 - अरावली परवतमाला का उत्तर-पश्चिमि भारत और उससे आगे की जलवायु पर प्रभाव पड़ता है।
 - मानसून के दौरान, परवत शृंखला मानसून के बादलों को धीरे-धीरे शामिल और नैनीताल की ओर पूर्व की ओर ले जाती है, जिससे उप-हिमालयी नदियों और उत्तर भारतीय मैदानों को पोषण मिलता है।
 - सर्दियों के महीनों के दौरान, यह सधु और गंगा की उपजाऊ जलोढ नदी घाटियों को मध्य एशिया से आने वाली ठंडी पश्चिमी हवाओं से बचाता है।